उपसर्ग-प्रत्यय

शब्दक निर्माणमे दू शब्दांशक महत्त्वपूर्ण योगदान रहैत अछि, ओ थिक उपसर्ग आ प्रत्यय ।

उपसर्ग ओ शब्दांश थिक जे शब्द अथवा शब्द खण्डक पूर्वमे लागि नव शब्दक निर्माण करैत अछि । यथा-जयक पूर्व 'परा' लगलासँ नव शब्द पराजय बनैत अछि । संस्कृतमे उपसर्गक संख्या 21 मानल गेल अछि जाहि सभक प्रयोग मैथिलीमे होइत अछि ।

1. प्र	=	प्रकार, प्रभाव, प्रख्यात, प्रस्थान, प्रसिद्धि आदि ।
2. परा	=	पराजय, पराक्रम, परामर्श, पराभव आदि ।
3. अव	=	अवनति, अवकाश, अवलोकन, अवगत, अवसान, अवशेष आदि ।
4. सम्	=	संसार, संयोग, संस्कार, संतोष, संरक्षण आदि ।
5. अति	=	अतिशय, अत्याचार, अत्यन्त, अतिरिक्त, अतिक्रमण आदि ।
6. अधि	=	अध्ययन, अधिकार, अधिकरण, अधिपति आदि ।
7. अनु	=	अनुभव, अनुसार, अनुशासन, अनुकरण, अनुरूप आदि ।
8. अप	=	अपवाद, अपमान, अपभ्रंश, अपव्यय, अपयश आदि ।
9. अपि	=	अपिधान, अपितु आदि ।
10. अभि	=	अभिमान, आहार, अभिमत, अभिलाषा, अभियोग, अभियान आदि ।
11. आ	=	आदान, आहार, आगमन, आक्रोश, आजन्म, आरोहण आदि ।
12. उत्	=	उन्नति, उत्सव, उद्गम, उद्देश्य, उत्तम, आदि ।
13. दुर्	=	दुर्जन, दुर्लभ, दुर्दशा, दुर्गुण आदि ।
14. दुस्	=	दुष्कर्म, दुष्प्रवृत्ति, दुस्साहस आदि ।

15. निर् = निर्मल, निर्जन, निर्भय, निराकरण आदि ।

16. वि = विज्ञान, वियोग, विदेश, विवाद, विकास आदि ।

17. प्रति = प्रत्येक, प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिकार आदि ।

18. परि = परिवार, परिजन, परिक्रमा, परिपूर्ण आदि ।

19. उप = उपकार, उपराग, उपासना, उपदेश आदि ।

20. सु = स्वागत, सुजन, सुकर्म, सुगम आदि ।

21. निस् = निष्काम, निष्प्रभाव, निश्छल, निश्चल, आदि ।

किछु एहनो उपसर्ग अछि जकर प्रयोग मैथिली भाषामे होइत अछि ।

यथा- नि = निकम्मा, निपत्ता, निडर आदि ।

अ = अकाठ, असार, अकछ, अकाज, आदि ।

अध = अधकपारी, अधपक्कू, अधखिज्जू आदि ।

अन = अनचिन्हार, अनदेख, अनमेल, अनहेर, अनटाह आदि।

कु = कुच्चर, कुठाम, कुपथ, कुगड़, कुमति आदि ।

ना = नासमझ, नामर्द, नालायक आदि ।

बे = बेदाग, बेलज्ज, बेलागि, बेहाल आदि ।

भरि = भरिपेट, भरिहाथ, भरिगर, भरिघर, भरिमन आदि ।

सह = सहकल, सहचर, सहमेलुआ, आदि ।

एहिना मौखिक मैथिली भाषामे क्षेत्रविशेषमे कतेको उपसर्गक प्रयोग देखबामे अबैत अछि । शब्दक निर्माणमे एकर महत्त्वपूर्ण योगदान अछि ।

प्रत्यय

प्रत्यय ओ शब्दांश थिक जे शब्द वा शब्दखण्डक अन्तमे लागि नव शब्दक निर्माण करैत अछि ।

यथा- महान+ता= महानता, नेना+पन=नेनपन ।

प्रत्यय मूलतः दू प्रकारक होइत अछि-**कृत् प्रत्यय** आ **तद्धित प्रत्यय** ।

कृत् प्रत्यय–धातुक अन्तमे प्रत्यय लगलासँ जे शब्द बनैत अछि ओ कृदन्त शब्द कहबैछ । सभक अन्तमे कृत् प्रत्यय लगैत अछि । कृत प्रत्यय लगलासँ जे शब्द बनैत अछि से कृदन्त कहबैत अछि ।

यथा-पढ़ धातुमे 'अनिहार' प्रत्यय लगलासँ पढ़निहार शब्द बनल अछि ।

तहिना- हँस = हसनिहार (अनिहार प्रत्यय)

लुट = लुटेरा(एरा प्रत्यय)

लड़ = लड़क्का (अक्का प्रत्यय)

चिकर = चिकराह (आह प्रत्यय)

एहिना विभिन्न कृत् प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि ।

तद्धित प्रत्यय- तद्धित प्रत्यय ओ प्रत्यय थिक जे संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक अन्तमे लागि नव शब्दक निर्माण करैत अछि ।

उदाहरण लेल किछु तद्धित प्रत्ययक प्रयोग देखाओल जाइत अछि–

यथा- सोन+आर=सोनार

अन्हार+इया= अन्हरिया

आँखि+गर= आँखिगर

बूढ़+आरी= बुढ़ारी

देव+त्व= देवत्व

लघु+ता=लघुता

तेल+आह=तेलाह

कोरि+आनी=कोरिआनी

एहिना मैथिली भाषामे लोक जीवनमे अनेक तद्धित प्रत्ययक प्रयोग देखबामे अबैत अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. उपसर्ग आ प्रत्ययमे अन्तर स्पष्ट करू ।
2. कृदन्त आ तद्धितमे अन्तर स्पष्ट करू ।
3. निम्नलिखित उपसर्गसँ शब्द बनाउ –

   प्र, सम्, उत्, नि, निर, अति, वि, सु, उप, अप ।
4. निम्नलिखित शब्दसँ उपसर्ग फराक करू –

   संवाद, उन्नति, प्रतिकार, अपमान, दुष्कर्म, निकाम, निर्जन, अनुभव, निष्काम, व्याकरण ।
5. निम्नलिखितमे कृदन्त आ तद्धित शब्दांश फराक करू –

   हरवाह, बसेरा, पनबट्टा, बुढ़ारी, लड़क्का, चोरि, हँसोड़, प्रभुता, फनैत, बसनिहार ।

सन्धि आ ओकर भेद

दू वर्णक मेलसँ ओकर ध्वनि आ आकारमे जे विकार उत्पन्न होइछ, तकरा सन्धि कहल जाइत अछि ।

यथा- रमा+ईश= रमेश । एतय आ+ई=क मेलसँ ए भेल अछि ।

एतय सन्धिक सङ्ग संयोगक उल्लेख करब आवश्यक अछि ।

स्वर रहित व्यञ्जनक मेल **संयोग** कहबैछ ।

जेना-पात चारि वर्णक मेलसँ बनल अछि, प्+आ+त्+अ । इएह चारू वर्णक मेल संयोग थिक ।

मुदा सन्धिमे आगम आ लोप अवश्य होइत अछि । सन्धि तीन प्रकारक होइछ-1. स्वर सन्धि, 2. व्यञ्जन सन्धि आ 3. विसर्ग सन्धि ।

1. **स्वर सन्धि**-स्वर वर्णक सङ्ग स्वर वर्णक मेल स्वर सन्धि कहबैछ । जेना- देव+आलय=देवालय ।

स्वर सन्धिक पाँच भेद अछि-

(क) दीर्घ सन्धि, (ख) गुण सन्धि, (ग) वृद्धि सन्धि, (घ) यण् सन्धि आ (ङ) अयादि सन्धि ।

(क) दीर्घ सन्धि-दू समान स्वर ह्रस्व अथवा दीर्घ मिलिकऽ कऽ दीर्घ भऽ जाइछ । यथा-

अ+अ=आ=(परम+अर्थ=परमार्थ)

आ+अ=आ=(विद्या+अर्थी=विद्यार्थी)

अ+आ=आ=(देव+आलय=देवालय)

आ+आ=आ=(विद्या+आलय=विद्यालय)

इ+इ=ई=(मुनि+इन्द्र=मुनीन्द्र)

इ+ई+ई=(गिरि+ईश=गिरीश)

ई+इ=ई=(मही+इन्द्र=महीन्द्र)

ई+ई=ई=(मही+ईश्वर=महीश्वर)

उ+उ=ऊ=(भानु+उदय=भानूदय)

उ+ऊ=ऊ=(लघु+ऊर्मि=लघूर्मि)

ऊ+उ=ऊ=(वधू+उत्सव=वधूत्सव)

ऊ+ऊ=ऊ=(भू+ऊर्ध्व=भूर्ध्व)

ऋ+ऋ=ॠ=(मातृ+ऋण=मातॄण)

(ख) गुण सन्धि-अ,आक बाद ह्रस्व अथवा दीर्घ इ, उ, ऋ आबय तँ

अ, आ +इ, ई=ए

अ, आ+ उ, ऊ= ओ

अ, आ+ऋ, ॠ =अर् भऽ जाइत अछि ।

यथा- देव+इन्द्र=देवेन्द्र

अ+इ=ए=(नर+इन्द्र=नरेन्द्र)

आ+इ=ए=(रमा+इन्द्र=रमेन्द्र)

अ+ई=ए=(नर+ईश=नरेश)

आ+ई=ए=(महा+ईश=महेश)

अ+उ=ओ=(पर+उपकार=परोपकार)

आ+उ=ओ=(महा+उपकार=महोपकार)

अ+ऊ=ओ=(जल+ऊर्मि=जलोर्मि)

आ+ऊ=ओ=(गंगा+ऊर्मि=गंगोर्मि)

अ+ऋ=अर्=(देव+ऋषि=देवर्षि)

(ग) **वृद्धि सन्धि**-अ, आ क आगाँ ए अथवा ऐ, ओ अथवा औ अयलासँ क्रमशः ऐ एवं औ भऽ जाइत अछि । यथा-

अ+ए=ऐ=(एक+एक=एकैक)

आ+ए=ऐ=(सदा+एव=सदैव)

अ+ऐ=ऐ=(मत+ऐक्य=मतैक्य)

आ+ऐ=ऐ=(महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य)

अ+ओ=औ=(परम+ओजस्वी=परमौजस्वी)

आ+ओ=औ=(महा+ओजस्वी=महौजस्वी)

अ+औ=औ=(हृदय+औदार्य=हृदयौदार्य)

आ+औ=औ=(महा+औषधि=महौषधि)

(घ) **यण् सन्धि**-इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠक बाद कोनो दोसर स्वर आबय तँ इ, ईक य्, उ, ऊ क व् आ ऋ-ॠक र् होइत अछि । यथा-

इ+अ=य=(यदि+अपि=यद्यपि)

इ+आ=या=(इति+आदि=इत्यादि)

ई+अ=य=(नदी+अम्बु=नद्यम्बु)

ई+आ=या=(देवी+आगम=देव्यागम)

उ+अ=व=(अनु+अय=अन्वय)

ऊ+अ=व=(सरयू+अम्बु=सरय्यम्बु)

ऋ+अ=र्=(धातृ+अंश=धात्रंश)

ऋ+आ=रा=(पितृ+आदेश=पित्रादेश)

(ङ) **अयादि सन्धि**-ए, ऐ, ओ अथवा औ केर बाद कोनो दोसर स्वर आबय तँ 'ए'केँ अय्, 'ऐ'केँ आय्, 'ओ'केँ अव् तथा 'औ'केँ आव् भऽ जाइत अछि । यथा-

ए+अ=अय्=(ने+अन=नयन)

ऐ+अ=आय्(नै+अक=नायक)

ओ+अ=अव्=(पो+अन=पवन)

औ+अ=आव्=(पौ+अक=पावक)

उपर्युक्त सन्धिकेँ निम्न रूपेँ देखल जा सकैत अछि ।

1. परम+आत्मा=परमात्मा
2. देव+इन्द्र=देवेन्द्र
3. सदा+एव=सदैव
4. अनु+अय=अन्वय
5. ने+अन=नयन

2. व्यञ्जन सन्धि

व्यञ्जन वर्णक सङ्ग स्वर अथवा व्यञ्जन वर्णक संयोग व्यञ्जन सन्धि कहबैत अछि । यथा-

दिक्+अम्बर=दिगम्बर

व्यञ्जन सन्धिक निम्नलिखित प्रमुख नियम अछि –

1. वर्गक पहिल अक्षर अर्थात् क, च, ट, त, प केर आगाँ कोनो वर्गक तेसर अथवा चारिम वर्ण, अथवा य, र, ल, व किंवा कोनो स्वर वर्ण रहय तँ वर्गक प्रथम अक्षर अपनहि वर्गक तेसर वर्ण भऽ जाइत अछि । यथा-

   वाक्+ईश=वागीश

   अच्+अन्त=अजन्त

   षट्+दर्शन=षड्दर्शन

   अप्+ज=अब्ज

   जगत्=ईश=जगदीश

2. वर्गक प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क बाद कोनो वर्गक पञ्चम अक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) आबय तँ प्रथम वर्गक स्थानमे ताहि वर्ग पञ्चम वर्णक भऽ जाइत अछि । यथा-

जगत्+नाथ=जगन्नाथ

अप्+मय=अम्मय

3. प्रथम अक्षर जँ स्वर वर्ण रहय आ बादमे 'छ' आबय तँ 'छ' क स्थान पर च्छ भऽ जाइत अछि । यथा-

वि+छेद=विच्छेद

4. जँ त् अथवा द्क बाद 'ह' रहय तँ त अथवा द क स्थान पर 'द्' आ 'ह' केर स्थानपर 'ध' भऽ जाइत अछि । यथा-

तत्+हित=तद्धित

उद्+हरण=उद्धरण

5. 'म्' क बाद जँ अन्त:स्थवर्ण (य, र, ल, व) अथवा उष्म वर्ण (श, ष, स, ह) रहय तँ 'म' क अनुस्वार भऽ जाइत अछि । यथा-

सम्+योग=संयोग, सम्+सार=संसार

6. 'ष्' क बाद जँ 'त्' अथवा 'थ' आबय तँ 'त्' क 'ट्' आ 'थ्' क 'ठ्' भऽ जाइत अछि । यथा-

पृष्+त=पृष्ट, पृष्+थ=पृष्ठ

7. जँ 'त्' अथवा 'द्' क बाद 'श्' आबय तँ 'त्' अथवा 'द्' क 'च्' आ 'श्' क बदला 'छ्' भऽ जाइत अछि । यथा-

उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट

8. जँ 'त' क बाद 'च्' आबय तँ 'त्' क बदला 'च्' भऽ जाइत अछि । यथा-

उत्+चारण=उच्चारण

9. जँ 'ऋ', 'र' वा 'ष' क बाद 'न्' रहय अथवा दुनूक बीच कोनो स्वर वर्ण, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, 'य', 'व' अथवा 'ह' रहय तँ 'न' क स्थानमे 'ण' होइत अछि । यथा-

भूष्+अन=भूषण

राम+अयन=रामायण

कृष्+न=कृष्ण

विसर्ग सन्धि

विसर्गक सङ्ग स्वर अथवा व्यञ्जन वर्णक मेलकेँ विसर्ग सन्धि कहल जाइत अछि। यथा-

नम:+कार=नमस्कार।

विसर्ग सन्धिक निम्नलिखित नियम अछि –

1. जँ विसर्गक बाद 'च' अथवा 'छ' रहय तँ विसर्गक 'श' तथा 'ट' अथवा 'ठ' रहय तँ विसर्गक 'ष्' भऽ जाइत अछि। यथा-

   नि:+चय=निश्चय

   नि:+छल=निश्छल

   धनु:+टंकार=धनुष्टंकार

2. विसर्गक बाद जँ 'त' अथवा 'थ' आबय तँ विसर्गक स्थानमे 'स्' भऽ जाइत अछि। यथा-

   दु:+तर=दुस्तर

   मन:+ताप=मनस्ताप

3. विसर्गक बाद जँ श, ष, स आबय तँ विसर्गक स्थान पर विसर्ग रहैत अछि अथवा आगूक वर्ण रहि जाइत अछि। यथा-

   दु:+शासन=दु:शासन अथवा दुश्शासन,

   नि:+संदेह=नि:सन्देह अथवा निस्सन्देह

4. विसर्गक पहिनेजँ 'इ' वा 'उ' रहय आ आगाँ 'क', 'ख' अथवा 'प', 'फ' आबय तँ विसर्गक 'ष्' भऽ जाइत अछि।

   यथा- नि:+कपट=निष्कपट

नि:+फल=निष्फल

नि:+पाप=निष्पाप

5. विसर्गक पहिने जँ 'अ' रहय आ बादमे 'क', 'ख', 'प', 'फ', 'स' मे सँ कोनो वर्ण आबय तँ विसर्ग यथावत् रहि जाइत अछि ।

यथा- प्रात:+कर्म=प्रात:कर्म

वय:+सन्धि=वय:सन्धि

पय:+पान=पय:पान

6. विसर्गसँ पूर्व 'इ' क मात्रा आ बाद मे 'र' क जँ प्रयोग भेल अछि तँ 'इ' 'ई' मे बदलि जाइत अछि आ विसर्गक लोप भऽ जाइत अछि ।

यथा- नि:+रव= नीरव

नि:+रोग=नीरोग

7. विसर्गसँ पूर्व 'अ', 'आ' कें छोड़ि कोनो दोसर स्वर रहय आ विसर्गक बाद कोनो स्वर वर्ण, वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम वर्ण, 'य', 'र', 'ल', 'व' एवं 'ह' क प्रयोग भेल रहय तँ विसर्गक स्थान पर 'र' भऽ जाइत अछि ।

यथा- नि:+उपाय=निरुपाय

नि:+धन=निर्धन

नि:+वेद=निर्वेद

8. विसर्गक पहिने जँ 'अ' क प्रयोग भेल अछि आ आगाँ वर्गक तेसर, चारिम वा पाँचम वर्ण, 'य', 'र', 'ल', 'व', 'ह', मे सँ कोनो एक वर्णक प्रयोग भेल अछि, तँ विसर्गक स्थान मे 'उ' आ पूर्ववर्ती 'अ' सँ मिलि गुण सन्धिक कारण 'ओ' मे परिणत भऽ जाइत अछि ।

यथा- मन:+रथ=मनोरथ

यश:+धरा=यशोधरा

पय:+द=पयोद

9. जँ विसर्गसँ पहिने आ बादोमे 'अ' आबय तँ पहिल 'अ' आ विसर्ग मिलि कऽ 'ओ' आ बादक 'अ' लुप्ताकार 'अ' (ऽ) मे बदलि जाइत अछि ।

यथा- प्रथम:+अध्याय=प्रथमोऽध्याय

यश:+अभिलाषी=यशोऽभिलाषी

10. अकारक बाद जँ विसर्ग रहय आ बादमे 'अ' क अतिरिक्त कोनो दोसर स्वरक प्रयोग होइत अछि, तँ विसर्गक मात्र लोप भऽ जाइत अछि ।

यथा- अत:+एव=अतएव

11. विसर्गक बाद जँ 'क' अथवा 'प' वर्ण आबय तँ विसर्गक स्थान पर 'स्' भऽ जाइत अछि ।

यथा- नम:+कार=नमस्कार, भा:+कर=भास्कर

दिव:+पति=दिवस्पति ।

सन्धि-कोश

देव+आलय=देवालय

हिम+आलय=हिमालय

दिव्य+अंशु= दिव्यांशु

गिरि+ईश= गिरीश

नारी+ईश्वर= नारीश्वर

गण+ईश= गणेश

महा+ईश= महेश

गंगा+उदक= गंगोदक

सम्+कार= संस्कार

दिक्+अम्बर= दिगम्बर

दिक्+गज= दिग्गज

नै+अक= नायक

पौ+अन=पावन

सु+आगत=स्वागत

नौ+इक= नाविक

अनु+अय=अन्वय

अनु+इति= अन्विति

वाक्+ईश= वागीश

यज्+न= यज्ञ

महा+ऋषि= महर्षि

सप्त+ऋषि=सप्तर्षि

परम+उदार= परमोदार

अच्+अन्त= अजन्त

जगत्+आनन्द=जगदानन्द

अप्+ज= अब्ज

वाक्+मय= वाङ्मय

षट्+मास= षण्मास

जगत्+नाथ = जगन्नाथ

उत्+चारण= उच्चारण

शरद्+चन्द्र= शरच्चन्द्र

सत्+जन= सज्जन

तत्+टीका= तट्टीका

उत्+लास=उल्लास

आवि:+कार=आविष्कार

तप:+वन=तपोवन

तेज:+मय= तेजोमय

नि:+गन्ध= निर्गन्ध

पुन:+जन्म= पुनर्जन्म

सम्+वाद=संवाद

सम्+कल्प=संकल्प

सम्+मति=सम्मति

उत्+नति=उन्नति

नि:+अर्थक=निरर्थक

आशी:+वाद= आशीर्वाद

नि:+कपट=निष्कपट

महा+उत्सव= महोत्सव

एक+एक= एकैक

जल+आशय= जलाशय

इति+ आदि= इत्यादि

प्रति+एक = प्रत्येक

अनु+एषण = अन्वेषण

नि+ऊन=न्यून

पो+इत्र= पवित्र

पो+अन= पवन

ने+अन= नयन

सत्+शास्त्र= सच्छास्त्र

तत्+हित= तद्धित

परि+छेद= परिच्छेद

आकृष्+त= आकृष्ट

पृष्+थ= पृष्ठ

सम्+योग=संयोग

सम्+हार= संहार

तृष्+ना=तृष्णा

ऋ+न= ऋण

दु:+आत्मा= दुरात्मा

नि:+धन=निर्धन

दु:+कर्म=दुष्कर्म

प्रात:+काल=प्रात:काल

मन:+योग=मनोयोग	वय:+वृद्ध=वयोवृद्ध
नि:+चय=निश्चय	नि:+तार= निस्तार
नि:+संतान=नि:संतान/निस्संतान	पुर:+कार=पुरस्कार
नि:+रस=नीरस	देव:+अयं=देवोऽयं
मन:+अनुकूल=मनोनुकूल	यश:+दा=यशोदा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. सन्धिक परिभाषा लिखू ।
2. सन्धि आ संयोगमे की अन्तर अछि ?
3. सन्धिक भेदक सोदाहरण परिभाषा लिखू ।
4. निम्नलिखित शब्दक सन्धि-विच्छेद करू –

   पवन, पवित्र, नयन, देव्यागम, सर्वोदय, वागीश, मनोरथ, उच्चारण, परिच्छेद, व्याकरण, न्यून, नमस्कार, मात्रादेश, निश्छल, सच्चिदानन्द ।
5. सन्धि करू –

   कृत्+अन्त, रमा+इन्द्र, चन्द्र+उदय, उत्+नति, अप्+ज, अत:+एव, उत्+चारण, चित्+मय, पय:+द, दु:+कर, नि:+गुण, पय:+द, तथा+एव, उत्+लेख
6. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू ।

( )+कर = शंकर,	प्रथम:+( ) = प्रथमोऽध्याय
मन:+( ) = मनोज,	यश:+( ) = यशोदा
मातृ+ ( ) = मात्रादेश,	यज्+( ) = यज्ञ

7. निम्नलिखित वर्णक योगसँ निर्मित शब्दक उदाहरण लिखू–

   1. इ+इ =

2. ओ+अ =

3. ऋ+आ =

4. ए+अ =

5. उ+उ =

8. निम्नलिखितमे शुद्ध सन्धि विच्छेदकेँ रेखांकित करू –

1. सूक्ति= सु+ऊक्ति, सू+उक्ति, सु+क्ति

2. मात्रानन्द = मातृ + आनन्द, मात्रा + आनन्द, मात्र + आनन्द

3. पवन = पो+वन, पो+अन, पौ+अन

4. कवीश्वर = कवि + इश्वर, कवि+ईश्वर, कवि+ईश्वर

5. नयन= ने+यन, ने+अन, नै+अन

समास आ ओकर भेद

जखन दू वा दूसँ अधिक पद अपन विभक्ति चिह्नकेँ छोडि परस्पर मिलि एक नव पदक निर्माण करैत अछि तँ ओ समास कहबैछ ।

यथा- राजाक मंत्री = राजमंत्री । एतय 'क' विभक्तिक लोप भेल अछि आ 'राजमंत्री' एक नव शब्द बनल अछि, जकरा समस्त पद कहल जाइत अछि ।

समासक अर्थ संक्षेप होइत अछि जकर विलोम व्यास होइछ अर्थात् विस्तार ।

सन्धि ओ समासमे अन्तर–

i. सन्धिमे वर्णक मेल होइत अछि, मुदा समासमे पदक मेल ।

यथा- सन्धि – देव+ईश=देवेश

समास – गंगाक जल= गंगाजल

ii. सन्धिमे जोड़ (+) चिह्न रहैत अछि, समासमे एहन कोनो चिह्न नहि रहैत अछि ।

iii. सन्धिमे अलग करबाक क्रियाकेँ विच्छेद मुदा समासमे विग्रह कहबैछ ।

iv. सन्धि मात्र तत्सम शब्दमे होइत अछि, मुदा समास तत्सम, तद्भव, देशज आ विदेशज समस्त शब्दक होइछ ।

समासक निम्नलिखित **छओ भेद** अछि-

1. तत्पुरुष, 2. कर्मधारय 3. द्विगु 4. द्वन्द्व 5. बहुव्रीहि 6. अव्ययी भाव ।

1. **तत्पुरुष समास**-जाहि समासक अन्तिम पद प्रधान होइछ, तकरा तत्पुरुष समास कहल जाइत अछि ।

यथा- कर्ममे वीर = कर्मवीर । एतय 'वीर' शब्दक प्रधानता अछि ।

विभक्तिक हिसाबेँ तत्पुरुषक छओ भेद होइछ –

(i) द्वितीया (ii) तृतीया (iii) चतुर्थी (iv) पञ्चमी (v) षष्ठी (vi) सप्तमी तत्पुरुष ।

(i) **द्वितीया तत्पुरुष** -तामक घैल=तमघैल, मोटाक बन्हना = मोटबन्हना, गिरहकेँ कटनिहार= गिरहकट ।

(ii) **तृतीया तत्पुरुष** -कष्टसँ साध्य= कष्टसाध्य, मदसँ मत्त= मदमत्त, अकालसँ पीड़ित = अकालपीड़ित

(iii) **चतुर्थी तत्पुरुष**-हाथक लेल कड़ी-हथकड़ी, देवक लेल बलि=देवबलि, तपक हेतु बल=तपोबल ।

(iv) **पञ्चमी तत्पुरुष**-जातिसँ भ्रष्ट=जातिभ्रष्ट, धर्मसँ च्युत = धर्मच्युत, कर्मसँ च्युत = कर्मच्युत ।

(v) **षष्ठी तत्पुरुष**-बेलक पात = बेलपात, पुस्तकक आलय = पुस्तकालय, देवक आलय= देवालय, राजाक पुत्र = राजपुत्र ।

(vi) **सप्तमी तत्पुरुष**-दानमे वीर = दानवीर, कर्ममे कुशल=कर्मकुशल, घरमे घुसना = घरघुसना ।

तत्पुरुष समासक किछु विशेष भेद अछि-

(क) **नञ समास**-जाहि तत्पुरुष समासक पहिल खण्डमे निषेध अथवा अभावक बोध होइछ, तकरा नञ समास कहल जाइछ ।

यथा- न भाव= अभाव, न अधिकार= अनधिकार ।

एतय एक बात ध्यातव्य जे 'न' क बाद व्यञ्जन अयलासँ नक अ, आ स्वर रहलासँ नक अन् भऽ जाइत अछि। जेना- **अ**-न सत्य-असत्य, **अन**- न आहार-अनाहार ।

(ख) **मध्यमपद लोपी समास**-जाहि तत्पुरुष समासमे दुनू पदक बीचक पद लुप्त भऽ जाइत अछि, ओ मध्यमपदलोपी समास कहबैछ ।

यथा- गोबरसँ बनल गणेश = गोबरगणेश, सिंह चिह्नसँ निर्मित आसन= सिंहासन, देवपूजक ब्राह्मण=देवब्राह्मण ।

(ग) **उपपद समास**-जाहि तत्पुरुष समासक उत्तरपदमे एहन धातु हो, जकर स्वतन्त्र प्रयोग कोनहु अर्थकेँ प्रकट नहि करय, से उपपद समास कहबैछ ।

यथा- कपार फोड़निहार=कपरफोड़ा, आगि मुतनिहार = अगिमुत्तू, नाकक पिचल = नकपिच्चा, कानक कटल = कनकट्टा ।

(घ) **अलुक् समास**-जाहि तत्पुरुष समासक प्रथम पदक विभक्तिक लोप नहि होइछ, तकरा अलुक् समास कहल जाइछ ।

यथा- खेचर - खेचर, युद्धमे स्थिर = युधिष्ठिर, मनमे जनमल = मनसिज । एतय प्रत्येक समस्त पदक प्रथम पदमे विभक्तिक लोप नहि भेल अछि ।

2. **कर्मधारय**-जाहि समासक दुनू पद विशेषण-विशेष्य वा उपमान-उपमेय हो, से कर्मधारय समास कहबैछ ।

यथा-नीलकमल, चरण-कमल । एतय विशेषण-विशेष्य आ उपमान-उपमेयकेँ जानब आवश्यक अछि ।

विशेषण-कोनो वस्तुक विशेषता बतौनिहार शब्द **विशेषण** कहबैछ ।

यथा-पीयर अम्बर -पीताम्बर, एहिमे 'पीयर' विशेषण अछि ।

विशेष्य-विशेषण जकर विशेषता बतबैत अछि से **विशेष्य** कहबैछ ।

यथा-नील कमलमे 'कमल' विशेष्य अछि ।

उपमान-जाहिसँ कोनो वस्तुक तुलना कयल जाइत अछि, सएह उपमान भेल ।

यथा- 'चन्द्रमुख' मे 'चन्द्र' पद उपमान अछि ।

उपमेय-जाहि वस्तुक तुलना कोनो आन वस्तुसँ कयल जाइत अछि, से उपमेय कहबैछ ।

यथा-'चन्द्रमुख' समस्त पदमे 'मुख' उपमेय अछि ।

कर्मधारय समासक चारि भेद अछि-

(i) **विशेषण पूर्वपद**-जाहि समासमे पूर्वपद विशेषण आ उत्तरपद विशेष्य होइछ, से विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहबैछ ।

यथा-महान् पुरुष= महापुरुष

(ii) **उपमा पूर्वपद**-जाहि समासक पूर्वपद उपमान ओ उत्तरपद उपमेय होइत अछि, से उपमा पूर्वपद कर्मधारय कहबैछ ।

यथा- घनश्याम, कमलनयन आदि ।

(iii) **उपमित पूर्वपद कर्मधारय** -जाहि समासक पूर्वपद उपमेय आ उत्तरपद उपमान रहय, से उपमित पूर्वपद कर्मधारय समास कहबैछ ।

यथा-मुखचन्द्र, पुरुषव्याघ्र ।

(iv) **रूपक कर्मधारय समास**-जाहि समासमे पूर्वपदपर उत्तर पदक आरोप हो, ओ रूपक कर्मधारय समास कहबैछ ।

यथा- मुख रूपी कमल = मुखकमल, कीर्त्तिरूपी लता=कीर्त्तिलता

3. **द्विगु समास**-जाहि समासक पहिल पद संख्यावाची हो, ओ द्विगु समास कहबैछ ।

यथा-तीन भुवनक समाहार = त्रिभुवन । समाहारक अर्थ समूह होइत अछि ।

4. **द्वन्द्व समास**-जाहि समासक दुनू पद प्रधान रहय, ओ द्वन्द्व समास कहबैछ ।

यथा-पोथी आ पतरा = पोथी-पतरा, भात आ दालि= भात-दालि ।

एहि समासक दू गोट भेद अछि । (i) इतरेतर द्वन्द्व तथा (ii) समाहार द्वन्द्व ।

(i) **इतरेतर द्वन्द्व**-जाहि पदक साहचर्य लोकमे प्रसिद्ध अछि, ताहि समान पदक योगमे इतरेतर द्वन्द्व समास होइछ ।

यथा- सीता आ राम = सीता-राम, चूड़ा आ दही = चूड़ा-दही ।

(ii) **समाहार द्वन्द्व**-जाहि समासमे समस्त पदक अर्थसँ भिन्न एक समूह अर्थक प्रतीति होइत अछि, ओ समाहार द्वन्द्व कहबैछ ।

यथा-जीव आ जन्तु=जीवजन्तु, पाणि आ पाद=पाणिपाद

5. **बहुव्रीहि समास**-जाहि समासक कोनो पद प्रधान नहि होइछ, प्रत्युत अन्य पद प्रधान होइत अछि, से बहुव्रीहि समास कहबैछ ।

यथा- पीत अम्बर छनि जिनक (विष्णु)

दश आनन छनि जिनका (रावण)

एहि समासमे कतहु पूर्वपद विशेषण, कतहु उत्तरपद विशेषण, आ कतहु पूर्वपद उपमान रहैत अछि ।

यथा-बुद्धि मन्द अछि जकर= मन्दबुद्धि,

नाक पिचल अछि जकर = नकपिच्चा

चन्द्रमा समान मुख अछि जकर = चन्द्रमुख

एतय कर्मधारय आ बहुव्रीहिमे अन्तरपर ध्यान देब आवश्यक अछि ।

पीत अम्बर=पीताम्बर=कर्मधारय

पीत अम्बर अछि जकर = पीताम्बर (विष्णु) बहुव्रीहि ।

6. **अव्ययीभाव**-जाहि समासक पूर्वपद प्रधान होइत अछि, ओ अव्ययीभाव समास कहबैछ । अर्थात् एहि समासक प्रथम पद अव्यय आ सम्पूर्णपद क्रियाविशेषणक रूपमे प्रयुक्त होइत अछि ।

यथा-शक्तिक अनुसार-यथाशक्ति, दिन-दिन=प्रतिदिन

अनुसार, अभाव, पर्यन्त, पश्चात्, समीप, योग्यता आदि अर्थमे एहि समासक प्रयोग होइत अछि ।

यथा- ज्ञानक अनुसार=यथाज्ञान

भीखक अभाव=दुर्भिक्ष

सेतु पर्यन्त = आसेतु

ग्रहक पश्चात्=अनुग्रह

ग्रहक समीप=उपग्रह

रूपक योग्यता=अनुरूप

प्रश्न ओ अभ्यास

1. समास ककरा कहल जाइत अछि ?
2. अव्ययीभाव समासक उदाहरण सहित परिभाषा लिखू ।
3. सन्धि आ समासमे अन्तर उदाहरण सहित स्पष्ट करू ।
4. निम्नलिखित शब्दक सविग्रह समास बताउ ।

   देशनिकाल, नकपिच्चा, सतघरा, एकजुतिया, अँखिफोड़ा, महापुरुष, अगिमुत्तु, यथाशीघ्र, लोटा-डोरी, राजकन्या
5. निम्नलिखित शब्दकेँ मिला कऽ समस्त पद बनाउ आ समासक नाम लिखू ।

   समस्त पद - समास

   (क) पथसँ भ्रष्ट-

   (ख) शक्तिक अनुसार-

   (ग) राजा आ रानी-

   (घ) तीन फलक समाहार-

   (ङ) न आचार-
6. निम्नलिखितमे शुद्धक समक्ष (√) आ अशुद्धक समक्ष (×) क चेन्ह लगाउ ।

   (क) समासक अर्थ विस्तार अछि । ( )

   (ख) सामासिक पदकेँ फराक करबाक क्रिया विच्छेद कहबैछ । ( )

   (ग) अव्ययीभाव समासक पूर्वपद प्रधान होइछ । ( )

   (घ) द्वन्द्व समासक दुनू खण्ड प्रधान होइत अछि । ( )

   (ङ) कर्मधारय समासमे अन्तिम पद प्रधान होइत अछि । ( )